रविवार • 21.11.2021

अमर उजाला 05

पौधों को रोगों से बचाएगी अग्निहोत्र की भस्म

भारतीय बागवानी सम्मेलन में केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के पूर्व निदेशक डॉ. आरके पाठक ने किया दावा

संवाद न्यूज एजेंसी

कानपुर। अग्निहोत्र (हवन) वेद में उल्लेखित प्राण ऊर्जा सिद्धांत पर आधारित विज्ञान है। आदिकाल में प्रदूषण के निवारण के लिए हर घर में अग्निहोत्र होता था। इसमें पिरामिड आकार के तांबे के बर्तन में देसी गाय के गोबर के उपलों को जलाकर उसमें देसी गाय के घी में डूबे हुए अक्षत डालने चाहिए। यह प्रक्रिया दो से तीन मिनट की है। इस काम को दिन में दो बार सूर्योदय और सूर्यास्त के समय करना चाहिए। इस प्रक्रिया में निकलने वाली भस्म को पानी में मिलाकर पौधों में छिड़काव करने से उन्हें कोई रोग नहीं लगेगा।

डॉ. आरके पाठक।

सीएसए में चल रहे भारतीय बागवानी सम्मेलन के तीसरे दिन केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान (सीआईएसएच), लखनऊ के पूर्व निदेशक डॉ. आरके पाठक ने यह दावा किया। उन्होंने बताया कि अग्निहोत्र से निकलने वाला धुआं कीटाणुओं और बैक्टीरिया को खत्म करता है। उन्होंने बताया कि शोध के दौरान एक कमरे में बैक्टीरिया की स्थिति को जानने के बाद मंत्रोच्चारण के साथ अग्निहोत्र किया तो 90 प्रतिशत बैक्टीरिया कम पाए गए। इस मौके पर डॉ. वाईआर चन्ना, डॉ. वीके त्रिपाठी, डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. खलील खान, डॉ. एके सिंह आदि मौजूद रहे।

समय से पहले या बाद में न तोड़ें संतरा

सेंट्रल सीट्रस रिसर्च इंस्टीट्यूट नागपुर के डॉ. दिनेश कुमार ने बताया कि संतरों को समय से पहले या बाद में नहीं तोड़ना चाहिए। ऐसा करने से फल की गुणवत्ता और स्वाद पर असर पड़ता है। फलों को मैकेनाइज्ड पैकिंग लाइन के तहत पैक करना चाहिए। ऐसा करने से ठंडे तापमान में 40-45 दिन तक फल सुरक्षित रहता है। इस प्रक्रिया के तहत फल को हाइपोक्लोराइड से धुलने के बाद सुखाया जाता है। फिर फूड ग्रेड वैक्स से उनका मोमीकरण करके बॉक्स में यूनिफॉर्म पैकिंग में रखते हैं।

देसी गाय के गोबर से नहीं लगता है तनावेधक रोग

सीआईएसएच के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. एसके शुक्ला ने बताया कि आमतौर पर किसान आम के पेड़ों का जीर्णोद्धार करने के लिए जमीन से तीन से चार मीटर की ऊंचाई छोड़कर काट देते हैं। ऐसा करने पर पेड़ में तनावेधक कीट लग जाता है और पेड़ खत्म हो जाता है। किसानों को पेड़ में बीच वाली शाखा को पूरा और उसके आसपास की दो शाखाओं को काटकर उनमें देसी गाय का गोबर लगा देना चाहिए। इससे तनावेधक रोग नहीं लगता है।

आम-अमरूद की प्रजातियों पर हुई चर्चा

सम्मेलन के प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता पूर्व कुलपति कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर डॉ. बलराज सिंह ने की। सीआईएसएच लखनऊ के निदेशक डॉ. शैलेंद्र राजन ने आम और अमरूद की प्रजातियों और नींबू अनुसंधान संस्थान नागपुर के निदेशक डॉ. डीके घोष गुणवत्तायुक्त नींबू उत्पादन पर विचार रखे। सीआईएसएच के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. रामअवध राम ने जीवामृत, बीजामृत, पंचगव्य आदि के प्रयोग के बारे में बताया।

कानपुर। रविवार • 21 नवम्बर • 2021

राष्ट्रीय सहारा

जैविक खेती ही बना सकती है

देश की कृषि का बेहतर भविष्य

भारतीय बागवानी सम्मेलन का तीसरा दिन

वैज्ञानिकों ने की जैविक खेती पर चर्चा

कानपुर (एसएनबी)। सीएसए कृषि एवं प्रौद्योगिकी विवि में चल रही चार दिवसीय भारतीय बागवानी सम्मेलन के तीसरे दिन शनिवार को मुख्यतः जैविक खेती पर चर्चा की गई व इसे कृषि का भविष्य बताया गया। कृषि वैज्ञानिकों ने इस पर संतोष जताया कि इधर किसान व प्रयोगधर्मी लोग जैविक खेती की ओर उन्मुख हुए हैं, लेकिन इसे और बढ़ावा दिये जाने की जरूरत है। जैविक फसलों व सब्जियों के उत्पादन से स्वास्थ्य संरक्षण व कुपोषण की समस्या पर भी नियंत्रण पाने में सफलता मिलेगी।

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ के पूर्व निदेशक एवं होमा टीचर डॉ.आरके पाठक ने जैविक खेती के विविध तरीकों के साथ ही कॉस्मेटिक उष्मा के प्रयोग से रासायनिक दुष्प्रभावों से रहित गुणवत्तायुक्त व बीमारी मुक्त फल एवं सब्जी उत्पादन पर विस्तृत जानकारी दी। उन्होंने बताया कि देश में पहले पारंपरिक तरीकों से ही खेतीबारी की जाती थी, लेकिन बाहरी प्रभाववश अब अधिकाधिक उत्पादनों के लिए रासायनिक खादों व दवाओं के प्रयोग का प्रचलन है, जो स्वास्थ्य सहित मृदा की सेहत तेजी से खराब कर रहा है। उन्होंने कहा कि हमें पुनः प्राकृतिक खेती की ओर बढ़ते हुए प्राकृतिक ऊर्जा को प्रयोग में लाते हुए विभिन्न जैविक उत्पादों के साथ-साथ गुणवत्तायुक्त उत्पादन करना चाहिए।

भारतीय बागवानी सम्मेलन में शामिल मुख्य वक्ता। फोटो : एसएनबी

आम की बेहतर पैदावार के लिए शाखाओं की कटाई-छंटाई जरूरी

केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान,लखनऊ के प्रधान वैज्ञानिक डॉ.सुशील कुमार शुक्ला ने बताया कि आम के बेहतर पैदावार के लिए शाखाओं की व्यवस्थित कटाई-छंटाई जरूरी है। उन्होंने कहा कि सदैव आम के पेड़ के बीच की शाखा हटानी चाहिए व दूसरे साल अन्य दो शाखाओं को काटना चाहिए, पूरी शाखाएं काटना गलत है। इससे पेड़ों की ऊंचाई कम होगी व अन्य शाखाओं पर आमों का बेहतर उत्पादन होगा। शाखाएं काटने के बाद कीड़ों से पेड़ों के बचाव के लिए कटी शाखाओं पर देसी गाय का गोबर लगाने या कीटनाशक पेस्ट लगाने का सुझाव भी उन्होंने दिया है।

उक्त संस्थान के ही प्रधान वैज्ञानिक डॉ.राम अवध राम ने पौधों की वृद्धि व उत्पादन के लिए विभिन्न बायो इन्हैंसर जैसे- अमृत पानी, जीवामृत, बीजामृत, पंचगव्य आदि के प्रयोग एवं उनके जैविक गुणवत्ता पर प्रकाश डाला। जम्मू-कश्मीर से आये डॉ. वसीम हसन रजा ने संरक्षित खेती में मृदा रहित रूटिंग मीडिया की जानकारी दी। आंध्रप्रदेश के डॉ.शरत रेड्डी ने नेटहाउस के अंदर पपीता की खेती पर किसान हित में अधिक उत्पादन पर चर्चा की।

सम्मेलन के तीसरे दिन प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ.बलराज सिंह, पूर्व कुलपति कृषि विवि जोधपुर व सह-अध्यक्षता माइको कंपनी के चेयरमैन डॉ.राजू बरवाली ने की। इस सत्र में केन्द्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ के निदेशक डॉ.शैलेन्द्र राजन ने आम एवं अमरूद की गुणवत्ता, उनका फलोत्पादन एवं महत्व के बारे में बताया।

नींबू अनुसंधान संस्थान नागपुर के निदेशक डॉ.डीके घोष ने गुणवत्तायुक्त नींबू उत्पादन पर विस्तृत जानकारी दी। द्वितीय तकनीकी सत्र में पंजाब कृषि विवि लुधियाना के डॉ.वाईआर चन्ना, सीएसए उद्यान विज्ञान विभागाध्यक्ष वीके त्रिपाठी व अन्य वक्ताओं ने संरक्षित खेती व बागवानी के विभिन्न पहलुओं पर मंथन किया।

सम्मेलन के स्थानीय संयोजक डॉ.एचजी प्रकाश, मीडिया प्रभारी डॉ.खलील खान, डॉ.आरपी सिंह, डॉ.एके सिंह, डॉ.संजय कुमार आदि सहित अन्य वैज्ञानिकों ने भागीदारी की।

वर्ष 15 अंक 317 पृष्ठ-8 मूल्य-1 रू0 कानपुर, रविवार 21 नवम्बर 2021

कानपुर व औरैया से एक साथ प्रकाशित, लखनऊ, इलाहाबाद, बुंदेलखंड, फतेहपुर, इटावा, कन्नौज, मैनपुरी,ऐटा, हरदोई, उन्नाव,कानपुर देहात में प्रसारित

RNI N.UPHIN/2007/27090

दैनिक
नगरछाया
आप की आवाज़.....

भारतीय बागवानी सम्मेलन में हुई जैविक खेती पर चर्चा

कानपुर (नगर छाया समाचार)। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कानपुर में चल रही चार दिवसीय भारतीय बागवानी सम्मेलन के तीसरे दिन आज दिनांक 20 नवंबर 2021 को देश के विभिन्न भागों से आए उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिकों ने अपने अपने शोधों का प्रस्तुतीकरण किया है। प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ बलराज सिंह पूर्व कुलपति कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर ने की। जबकि अध्यक्षता डॉ राजू बरवाली चेयरमैन माइको कंपनी ने की। इस सत्र में केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ के निदेशक डॉ शैलेंद्र राजन ने आम एवं अमरूद के मूल ब्रन्तों की गुणवत्ता एवं उनका फलोत्पादन एवं महत्व पर विस्तार से बताया तत्पश्चात डॉ डीके घोष निदेशक नींबू अनुसंधान संस्थान नागपुर महाराष्ट्र में गुणवत्ता युक्त नींबू उत्पादन में मूल ब्रन्तों की उपलब्धता, गुण एवं बीमारी रहित उत्पादन करने के विस्तार से वर्णन किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ के पूर्व निदेशक एवं होमा टीचर डॉक्टर आरके पाठक एवं सह अध्यक्षता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के डॉक्टर वाईआर चन्ना एवं संगोष्ठी उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष वीके त्रिपाठी ने की। इस तकनीकी सत्र में डॉ बलराज सिंह पूर्व कुलपति कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर में संरक्षित खेती पर विस्तार से प्रकाश डाला होमा टीचर डॉक्टर आरके पाठक ने कॉस्मेटिक ऊष्मा के प्रयोग से गुणवत्ता युक्त, बीमारी रहित रसायनों के दुष्प्रभाव से फल व सब्जी उत्पादन पर विस्तार से जानकारी दी। सत्र में आंध्र प्रदेश के डॉक्टर शरत रेड्डी ने नेट हाउस के अंदर पपीता की खेती पर किसानों के हितों पर अधिक उत्पादन हेतु चर्चा की। इस अवसर पर स्थानीय संयोजक डॉ एच जी प्रकाश, भींडिया प्रभारी डॉ खलील खान, डॉक्टर आरपी सिंह, डॉक्टर एके सिंह, डॉक्टर संजय कुमार एवं कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

www.facebook.com/worldkhabarexpress www.twitter.com/worldkhabarexpress www.youtube.com/worldkhabarexpr

WORLD खबर EXPRESS

शनिवार, 20-11-2021 अंक-406
www.worldkhabarexpress.media
www.worldkhabarexpress.com

WORLD खबर एक्सप्रेस
MID DAY E-PAPER

WORLD खबर एक्सप्रेस कानपुर

बागवानी सम्मेलन में जैविक खेती पर चर्चा

कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय में चल रही चार दिवसीय भारतीय बागवानी सम्मेलन के तीसरे दिन आज देश के विभिन्न भागों से आए उत्कृष्ट कृषि वैज्ञानिकों ने अपने-अपने शोधों का प्रस्तुतीकरण किया। पहले तकनीकी सत्र की अध्यक्षता कृषि विश्वविद्यालय जोधपुर के पूर्व कुलपति डॉ. बलराज सिंह और माइको कंपनी के चेयरमैन डॉ. राजू बरवाली ने की।

इस सत्र में केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ के निदेशक डॉ. शैलेंद्र राजन ने आम व अमरूद के मूल ब्रन्तों की गुणवत्ता और उनका फलोत्पादन एवं महत्व पर विस्तार से बताया। नींबू अनुसंधान संस्थान नागपुर, महाराष्ट्र के निदेशक डॉ. डीके घोष ने गुणवत्ता युक्त नींबू उत्पादन में मूल ब्रन्तों की उपलब्धता, गुण व बीमारी रहित उत्पादन करने के लिए मूल ब्रन्तों के उपयोग पर विस्तार का वर्णन किया। द्वितीय सत्र की अध्यक्षता केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान, लखनऊ के पूर्व निदेशक एवं होमा टीचर डॉ. आरके पाठक व सहअध्यक्षता पंजाब कृषि विश्वविद्यालय लुधियाना के डॉ. वाईआर चन्ना और संगोष्ठी उद्यान विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष वीके त्रिपाठी ने की। इस तकनीकी सत्र में डॉ. बलराज सिंह ने संरक्षित खेती पर किए जा रहे विभिन्न किसान हितैषी अनुसंधानों पर विस्तार से प्रकाश डाला। होमा टीचर डॉ. आरके पाठक ने कॉस्मेटिक ऊष्मा के प्रयोग से गुणवत्ता युक्त, बीमारी रहित रसायनों के दुष्प्रभाव से फल व सब्जी उत्पादन पर विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने कहा कि हमें पुनः प्राकृतिक खेती की तरफ बढ़ते हुए प्राकृतिक ऊर्जा को उपयोग में लाते हुए विभिन्न जैविक उत्पादों के साथ-साथ गुणवत्ता युक्त उत्पादक करना चाहिए। इसमें केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान के प्रधान वैज्ञानिक डॉ. राम अवध राम ने पौधों की वृद्धि व उत्पादन के लिए उपयोगी विभिन्न बायो इनहैंसर जैसे अमृत पानी, जीवामृत, बीजामृत, पंचगव्य आदि के प्रयोग और उनके जैविक गुणवत्ता पर विस्तार से प्रकाश डाला। जम्मू-कश्मीर से डॉ. वसीम हसन रजा ने संरक्षित खेती में मृदा रहित रूटिंग मीडिया पर विस्तार से जानकारी दी। साथ ही आंध्र प्रदेश के डॉ. शरत रेड्डी ने नेट हाउस के अंदर पपीता की खेती पर किसानों के हितों पर अधिक उत्पादन हेतु चर्चा की। इस अवसर पर स्थानीय संयोजक डॉ. एच जी प्रकाश, भींडिया प्रभारी डॉ. खलील खान, डॉ. आरपी सिंह, डॉ. एके सिंह, डॉ. संजय कुमार व कृषि विज्ञान केंद्र के वैज्ञानिक उपस्थित रहे।

हिन्दुस्तान 11
कानपुर • रविवार • 21 नवंबर 2021

काजू की बलभद्र, जगन्नाथ प्रजाति से देश बनेगा सेहतमंद

सीएसए

कानपुर | वरिष्ठ संवाददाता

काजू की बालभद्र और जगन्नाथ प्रजातियां देश को सेहतमंद बनाएंगी। दोनों प्रजातियों में उत्पादकता ज्यादा है। इस पर प्रतिकूल वातावरण का भी अधिक असर नहीं पड़ता है। शीघ्र देश में काजू उत्पादन बढ़ाने में यह अधिक उपयोगी साबित होंगी।

चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय (सीएसए) में चल रही 9वीं बागवानी विज्ञान कांग्रेस के दौरान उड़ीसा से आए वैज्ञानिक डॉ. चिंतामणी पांडा, डॉ. रंजना कुमार तराइ और डॉ. हस्कर चंडादास ने बताया कि इन प्रजातियों की उत्पादकता प्रति हेक्टेयर दो टन होती है।

अमरूद की नई किस्म

प्रथम तकनीकी सत्र की अध्यक्षता डॉ. बलराज सिंह, पूर्व कुलपति कृषि विव जोधपुर और अध्यक्षता डॉ. राजू बरवाली ने की। सत्र में केंद्रीय उपोष्ण बागवानी संस्थान लखनऊ के निदेशक डॉ. शैलेंद्र राजन ने आम और अमरूद के बारे में कहा कि शीघ्र ही इनकी नई प्रजातियां आएंगी। डॉ. डीके घोष निदेशक, नींबू अनुसंधान संस्थान नागपुर महाराष्ट्र ने गुणवत्ता युक्त नींबू उत्पादन की जानकारी दी। जम्मू और कश्मीर के डॉ. वसीम हसन रजा ने संरक्षित खेती में मृदा रहित रूटिंग मीडिया के बारे में बताया। स्थानीय संयोजक डॉ. एचजी प्रकाश, डॉ. खलील खान, डॉ. आरपी सिंह, डॉ. एके सिंह रहे।